प्रेम की ओर . . .

~ गुरुमाई चिद्विलासानन्द

प्रेम की ओर . . .

कुछ लोगों की ऐसी मानसिकता होती है कि उन्हें सत्कर्म इसलिए करने चाहिए ताकि वे अपने लाभ के लिए अच्छे फल एकत्र कर सकें। इसके बजाय यदि तुम्हारी मानसिकता ऐसी हो कि तुम प्रत्येक कार्य इस इरादे से करो कि वह किसी दूसरे के जीवन को बेहतर बनाए तो क्या हो? तुम्हें क्या लगता है कि उसका परिणाम कैसा होगा? जब तुम उस व्यक्ति के सद्‌गुणों की सराहना होते सुनो तो तुम कैसा महसूस करोगे? तुमने उनकी जो मदद की है क्या तुम उसे प्रेम को अर्पित एक मधुरतम भावांजलि मानोगे?

~ गुरुमाई

© २०२४ एस. वाय. डी. ए. फ़ाउन्डेशन®। सर्वाधिकार सुरक्षित।